13.11.2021 II
Sub.
17th Day

हुमायूँ का शेष काल (अन्तिम आंतरिक)

चौदह हजार ईरानी सैनिकों की मदद से हुमायूँ ने अपने भाई अस्करी से 1545 ई० में कन्धार और कामरान से 1547 ई० में काबुल छीन लिया। अगले 8 वर्ष हुमायूँ अफ़गान-व्यवस्था फिर और भारत पर पुनः आधिपत्य जमाने की तैयारी करने लगा। उसके भाईयों ने उसके विरुद्ध षड्यंत्र किया तो उसने उन्हें समाप्त कर दिया। हिन्दाल युद्ध में मारा गया। जबकि अस्करी की मृत्यु मक्का जाते समय हो गई और कामरान को अन्धा करके मक्का भेज दिया गया। इसप्रकार उसने अपने भाईयों से छुटकारा पाया।

इसी बीच शेरशाह की मृत्यु हो गई और सूर साम्राज्य अशान्त होकर टूट गया। इस अवसर का हुमायूँ ने लाभ उठाया। वर्ष 1554 के अन्त में हुमायूँ काबुल से दिल्ली की तरफ रवाना हुआ। जुलाई 1555 ई० में सरहिन्द के समीप उसने सिकन्दर सूरी को परास्त किया और दिल्ली तथा आगरा पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार हुमायूँ ने स्वयं को पुनः खोए हुए मुगल सिंहासन पर स्थापित किया। लेकिन हुमायूँ मुगल साम्राज्य को कोई स्थायित्व दे पाता या विजय का सुख भोग पाता उससे पहले 1556 ई० में पुस्तकालय की सीढ़ियों से लुढ़ककर मृत्यु हो गई। जिस समय उसकी मृत्यु हो गई भारत में

राजनीति अस्थिरता बरकरार थी। हुमायूँ को विरासत में ऐसा राजतंत्र मिला था जिसे केवल युद्धकालीन परिस्थितियों में ही एक जुट बनाए रखा जा सकता था। जो बाबर की मृत्यु के समय कमजोर, असंगठित तथा अस्थायी था [illegible]